अभ्यासयोगयुक्तेन=भगवान् के ध्यानरूप अभ्यास से युक्त; **चेतसा**=चित्त से; **न अन्य गामिना**=अनन्य (अचल); **परमम्**=परम; **पुरुषम्**=श्रीभगवान् को; **दिव्यम्**=अलौकिक; **याति**=प्राप्त होता है; **पार्थ**=हे पृथापुत्र; **अनुचिन्तयन्**=निरन्तर चिन्तन करते हुए।

अनुवाद

हे पार्थ (अर्जुन) ! जो पुरुष अनन्य चित्त से निरन्तर परम पुरुष के स्मरण का अभ्यास करता है, वह निःसन्देह मुझ को ही प्राप्त होता है।।८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने स्मरण के माहात्म्य पर बल दिया है। **हरे कृष्ण** संकीर्तन से श्रीकृष्ण की स्मृति जागृत हो उठती है। भगवन्नाम-ध्वनि के श्रवण-कीर्तन का यह अभ्यास कर्ण, रसना और चित्त को भक्तियोग में लगा देता है। यह यौगिक ध्यान बड़ा ही सुखसाध्य और भगवत्प्राप्ति के अनुकूल है। **पुरुषम्** का तात्पर्य भोक्ता है। श्रीभगवान् की तटस्था शक्ति होते हुए भी जीव प्राकृत विकारों से ग्रस्त हैं। वे अपने को भोक्ता समझते हैं, परन्तु वास्तव में वे परम-भोक्ता नहीं हैं। यहाँ स्पष्ट उल्लेख है कि नारायण, वासुदेव, आदि अपने विभिन्न अंश-प्रकाशों में एकमात्र श्रीभगवान् परम-भोक्ता हैं।

भक्तगण **हरे कृष्ण** महामन्त्र का संकीर्तन करते हुए अपने आराध्य श्रीभगवान् का नारायण, कृष्ण, राम आदि किसी भी रूप में नित्य-निरन्तर चिन्तन कर सकते हैं। इस अभ्यास से साधक की शुद्धि होगी और जीवन के अन्त में, निरन्तर कीर्तन के प्रताप से वह भगवद्धाम को चला जायगा। योगाभ्यास का अर्थ अन्तर्यामी परमात्मा का ध्यान करना है। इसी प्रकार, **हरे कृष्ण** महामन्त्र का कीर्तन करने से मन सदा श्रीभगवान् में एकाग्र रहता है। मन बड़ा चंचल है; इसलिए यह आवश्यक है कि उसे हठपूर्वक कृष्णस्मरण में लगाया जाय। इस सन्दर्भ में उस कीट का दृष्टान्त प्रसिद्ध है, जो भृंग का चिन्तन करते-करते उसी जीवन में भृंग बन जाता है। ऐसे ही, यदि हम श्रीकृष्ण का नित्य स्मरण किया करें, तो यह निश्चित है कि जीवन के अन्त में हमें श्रीकृष्ण के तुल्य दिव्य देह मिलेगी।

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।।९।।

कविम्=सर्वज्ञ; **पुराणम्**=अनादि; **अनुशासितारम्**=ईश्वर; **अणोः**=अणु से भी; **अणीयांसम्**=लघु; **अनुस्मरेत्**=नित्य चिन्तन करता है; **यः**=जो; **सर्वस्य**=सबका; **धातारम्**=पालनकर्ता; **अचिन्त्य**=अतर्क्य स्वरूप; **रूपम्**=आकार; **आदित्यवर्णम्**=सूर्य के समान तेजोमय; **तमसः**=अन्धकार से; **परस्तात्**=परे।

अनुवाद

उन परम पुरुषोत्तम का ध्यान करे जो सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता और शिक्षक, अणु